नाट्यशास्त्र की कथावस्तु के नियामक तत्त्व

प्रो0 श्रीप्रकाश राय

सुन्दरम्

नाट्यकार की मूलभावना कथावस्तु में ही निहित होती है जिसके माध्यम से वह एक विशेष प्रकार की शिक्षा अपने समाज को देना चाहता है। इसके माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव को जाना तथा समझा जाता है। नाटक की कथावस्तु जितनी प्रभावशाली होगी उतना ही प्रभावशाली मंचन का प्रदर्शन होगा और उसका मंचन दर्शकों पर उतना ही ज्यादा प्रभाव छोड़ेगा। नाटक की कथावस्तु उसके देश, काल में समस्त वृत्तियों का वहन करती है। चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, व्यवहारिक, आर्थिक, भौगोलिक कोई भी हो। नाटक की कथावस्तु के आरम्भ और विकास में नाटककार की परिपक्वता एवं कल्पनादर्शिता की अहम् भूमिका होती है। वह अपनी चतुराई से कथावस्तु को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। उसके माध्यम से वह दर्शकों में कौतूहल को उत्पन्न करता है तथा उसे जागरूक रखता है।

भारतीय नाट्यकला अनेक विषय–वस्तु से सम्बद्धित होने पर भी उसकी मूलभावना मानव के शाश्वत मूल्यों की स्थापना में ही निहित है। भारतीय नाट्यकला सात्त्विक भावों के उदय का आज एक प्रबल माध्यम बन चुकी है। वस्तुतः कला का मुख्य प्रयोजन सत्य, शिव तथा सुन्दरं का उदय ही है। नाटक कला का आनन्दमय होना नितान्त उचित है। इन्हीं दार्शनिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक दृष्टियों को लक्ष्य में रखने से भारतीय नाटक सर्वदा सुखान्त ही होता है।